International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 1; Issue 9; September 2016; Page No. 40-41

चन्द्रकान्ता के कथा साहित्य में नारी और समाज

रेनुका कुमारी

पी-एच0डी0, हिन्दी विभाग, डॉ0 भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

प्रगतिशील कथाकारा चन्द्रकान्ता ने नारी चेतना को अपनी कहानियों का कथ्य बनाया है जो स्त्री विमर्श का द्योतक है। कथाकारा ने नारी की स्वतंत्रतता में विरोधी समाज की परिस्थितियों को उकेरा है। जिसका आज की स्त्री विरोध करती है और समाज के जीवन मूल्यों को अस्वीकार करती लक्षित होती है।

स्त्री को समाज द्वारा स्वीकृत अपनी निरीह छवि को तोड़कर वस्तु बनने से इनकार करना होगा, अपने अन्दर विवेक सम्पन्न निर्णय शक्ति को पैदा करना पड़ेगा, अपनी मुक्ति के लिए अपनी भावनाओं को संयत तथा अपने विवेक को जाग्रत रखना होगा, यही वास्तव में स्त्री विमर्श के मुख्य सोपान है जिनके माध्यम से स्त्री समाज में अपने लिए सुरक्षित स्थान की अधिकारिणी बन सकती है। सदियों के बाद आज स्त्री 'स्व' के प्रति जाग्रत हो गई है, आज की नारी नए तेवरों के साथ रचना फलक पर उभर रही है निर्मला पुतूल की कविता में आज की स्त्री का आक्रोश कुछ इस तरह उभर कर आया है :–

''मैं चूप हूँ तो मत समझो की मैं गूँगी हूँ, या रखा है मैंने आजीवन मौन व्रत गहराती। चुप्पी के अँधेरे में सुलग रही है? भीतर जो आक्रोश की आग उसकी रोशनी में पढ़ रही हूँ।

सारांश

समकालीन स्त्री विमर्श ने पुरूषवादी समाज के प्रश्न प्रतिनिधियों को पहचानने का नया वातावरण तैयार किया है सन् 1970 के बाद की महिला कथाकारों ने अपनी लेखनी के माध्यम से स्त्री के शोषण रूढ़ियों को जकड़न, कुण्ठा, निराशा, पीड़ा अपमान, असन्तोष संत्रास और असुरक्षा आदि को व्यक्त करते हुए सवेदना के बदलते स्वरूप को व्यक्त किया है।'' नारीवाद पुरूष और स्त्री के बीच नकरात्मक भेदभाव की जगह स्त्री के प्रति सकारात्मक पक्षपात की बात करता है। वस्तुतः इस रूप में देखा जाए तो स्त्री अपने समय और समाज के जीवन की वास्तविकता तथा संभावनाओं को तलाश करने वाली दृष्टि है।

आज की स्त्री जब अँधेरे से उजाले में प्रवेश करती नौकरी या काम करने के लिए बाहर जाती हे, फिर शिक्षा लेने बाहर निकलती है। तो वह हँसने खेलने पर समाज विरोध करता है। चाहे वह बेटी हो, बहन, माँ या फिर बहू–विधवा स्त्री हो। उसे अपने तरीके से स्वतंत्रता पूर्वक जीने नहीं देते हैं। आज समाज किसी न किसी प्रकार उन्हें मन–माफिक जीने नहीं देता है उसको शारीरिक और मानसिक यन्त्रणा देता है। सादियों से यह परम्परा चली आ रही है कि स्त्री का स्वतंत्र रहना अच्छा नहीं है, अतः बचपन में पिता, युवावस्था में पति और वृद्धावस्था में पुत्र को स्त्री का रक्षक नियुक्त किया गया है। व्यवस्था से व्यथित स्त्री स्वयं को कमजोर मानकर अपनी रक्षा का भार पुरूषों को सौंपती रहती, जीवन यापन के लिए पुरूषों पर निर्भर रही, पुरूष स्त्री का रक्षक भी था और भक्षक भी परन्तु समाज की कठिन से कठिन चुनौतियों का सामना करते हुए हर क्षेत्र में पुरूषों की बराबरी में खड़ी होने का प्रयास करती है, परंतु समाज उसे किसी न किसी प्रकार उसे अपमानित और प्रताड़िता करता है उसका मानसिक शोषण करता है।

चन्द्रकान्ता की कहानियों में नारी की स्वतंत्रता में समाज विरोध करता हुआ दृष्टिगोचर होता हैं' करीने की कायल कहानी में उन्होंने ऐसी स्त्री की संवेदना को उठाया है जिसके विवाह के पाँच वर्ष बाद भी बच्चा नहीं हुआ है। निशा अपने अस्मित्व को बचाए रखने और स्त्री–पुरूष फूहड तानों के कारण उसे जीने नहीं देते हैं। जब वह देवर की शादी में जाती है वहाँ उसे दस स्त्रियों ने दस फिकरे कसे। ''ब्याह के पांचेक बरसों में भी जिसकी शोद भराई नहीं हुई उसे आगे की आशा छोड़ देनी चाहिए। पक्की लड़कियों का ब्याह जो होता है कलयुग में।'' यानि जिन स्त्रियों के संतान नहीं होती, उन्हें सदा बेइज्जत किया जाता है उन्हें शुभ कार्यों से वंचित रखा जाता है जो उचित नहीं है। अतः उन्हें समाज स्वतंत्रतापूर्वक जीने नहीं देता है।

उपसंहार

आज की स्त्री शिक्षित होकर सरकारी अर्द्ध सरकारी नौकरी कर रही है, परंतु उन्हें आफिस में पुरूष कर्मचारी की अपेक्षा नीचा दिखाया जाता है पुरूष से कम वेतन दिया जाता है 'तफरीह उर्फ चकई चकरघिन्नी' कहानी की निशा वर्गा इसी प्रकार की समस्या झेलती है वह एक पत्रकार है जो मंत्रियों के इण्टरव्यू लेती है' परंतु वह वर्षात की वजह से समय पर नहीं पहुँच पाती है जिससे उसका बॉस उसे अपमानित करता है वह सोचती है – 'कही गलती बॉस के चमचों के उस झुण्ड में तो नहीं थी, जिसमें न बॉस में नसे सुर की तारीफ थी और न होली दीवाली पर कोई तोहफा''? इस प्रकार आज शिक्षित स्त्री को भी समाज जीने नहीं देता, उसे नौकरी नहीं करने देता है। चन्द्रकान्ता ने कश्मीर के आतंकवादी परिवेश की परिस्थितियों को उकेरा है। आतंकवादी स्त्री को बाहर अकेले देखकर उसके ऊपर झपटते हैं। उसका शारीरिक शोषण करते हैं। अपने कहानियों में कथाकारा ने स्त्रियों के दुख–दर्द और यौन शोषण को भी उभारा है। 'आवाज' कहानी की विनी भी आतंक के वातावरण से जूझती लक्षित होती है। 'न सोहवी न हीर' कहानी में ऐसी लड़की की पीड़ा को व्यक्त किया गया है जो अपनी माँ के अंकुश में जीती है उर्वशी अपने मन से पढ़ नहीं सकती है, अपने मन से भास्कर से विवाह नहीं कर सकती। यानि उसके माता–पिता उसे स्वतंत्र जीवन नहीं जीने देते। उर्वशी माँ उसे घर की जिम्मदारियाँ सौंपती है जिसे वह खाली समय में घर से बाहर न जा सके। ''माँ उसके खिलन्दडेपन और पैरों में चकरी होने के कारण विमला के भविष्य की चिंता में घुली भुनभुनाती रहती। पिता पर बेटी को पढ़ाने का भूत सवार न होता तो वह 'मेट्री' पास करने के बाद ही उसके हाथ पीले कर गंगा में गोता लगाती। ''माँ के कहे, पिता के लाड़ ने बेटी को बिगड़ने में कोई कसर नहीं छोड़ी सीख सिखौवल की बात मुँह से निकली कि पुलिसिए की तरह झण्डा घुमा घमैंनिसयाएँगे, यमदूत की तरह बेटी की जान के पीछे क्यों पड़ी हो, चार दिन की मेहमान होती है लड़की। बाद मैं तो . . . .।''

निष्कर्ष

समग्र विवेचन एवं विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि चन्द्रकान्ता ने अपनी कहानियों में स्त्री विमर्श का चित्रण व्यापक फलक

पर चर्चा की है। उन्होंने ने स्त्री द्वारा पुरूष प्रधान समाज में नारी की स्वतंत्रता में विरोधी समाज को अपने विचारों में व्यक्त किया है।

सन्दर्भ

1. हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में नारी चरित्र डा0 रामगोविन्द सिंह शोध साहित्य प्रकाशन, संस्करण 1973, पृ0 143।
2. स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी कहानी में नारी के विविध रूप डा0 गणेशदास
3. साठोत्तरी हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी, डा0 सौ0 मंगल कम्पनीकैरे, पृ0 21, विकास प्रकाशन; कानपुर संस्करण 2012।
4. 'तफरीह उर्फ चकई–चकरघिन्नी' (अब्बू ने कहा था कहानी संग्रह) चन्द्रकान्ता पृ0 84।
5. उपभोक्ता नहीं है स्त्री 'मधुप, दैनिक नव ज्योति, 9 जून 2011
6. सं0 नंदकिशोर मिश्रा, भाषा अंक – 2, नवम्बर –दिसम्बर 1999 (डा0 जौहरा अफजल), साठोत्तरी कथा साहित्य मैं श्रम–जीवी नारी) पृ0 78।
7. मेहरून्निसा परवेज, अकेला पलाश, पृ0 33।
8. ममता कलिया, बेघर उपन्यास से उद्धत।
9. आधुनिक हिन्दी शब्द कोश–2, पृ0 535।
10. चित्रा मुदगल दे से नहीं दिमाग से होगी स्त्री मुक्ति, राष्ट्रीय सहारा 9 जुलाई 2006।
11. निर्मला पुतुल पत्रिका से उद्धत।
12. स्त्री उपेक्षिता, प्रभा खेतान हिन्दी पॉकेट बुक्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2002।
13. स्त्री मुक्ति –स्त्री का वर्तमान परिदृश्य, नीलम शंकर अप्रैल–2006।
14. स्त्री अस्मिता और कृष्णसोबती, डा0 रूपा सिंह पूर्वोदय प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2006।
15. स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार, वैशली पाण्डे, विकास प्रकाशन कानपुर प्रथम संस्करण 2007।
16. स्त्री–पुरूष के सम्बन्धों का विमर्श, डा0 उषाकीर्ति, राणावत साहित्य चन्द्रिका, जयपुर, संस्करण 2006।
17. शाल्मली, नासिरा शर्मा, किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1887।
18. सूरजमुखी अँधेरे के कृष्णा सोबती, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1972।
19. हशिमे की इबारतें चन्द्रकान्ता।
20. हिन्दी उपन्यास और स्त्री जीवन, डा0 जयोति किरण, मेधा बुक्स, दिल्ली प्रथम संस्मरण–2004।